सखी वे मुझसे कहकर जाते

मैथिली शरण गुप्त

Dr. ANUROJ.T.J
Assistant Professor & HOD
Department of Hindi
Little Flower College, Guruvayoor, Kerala

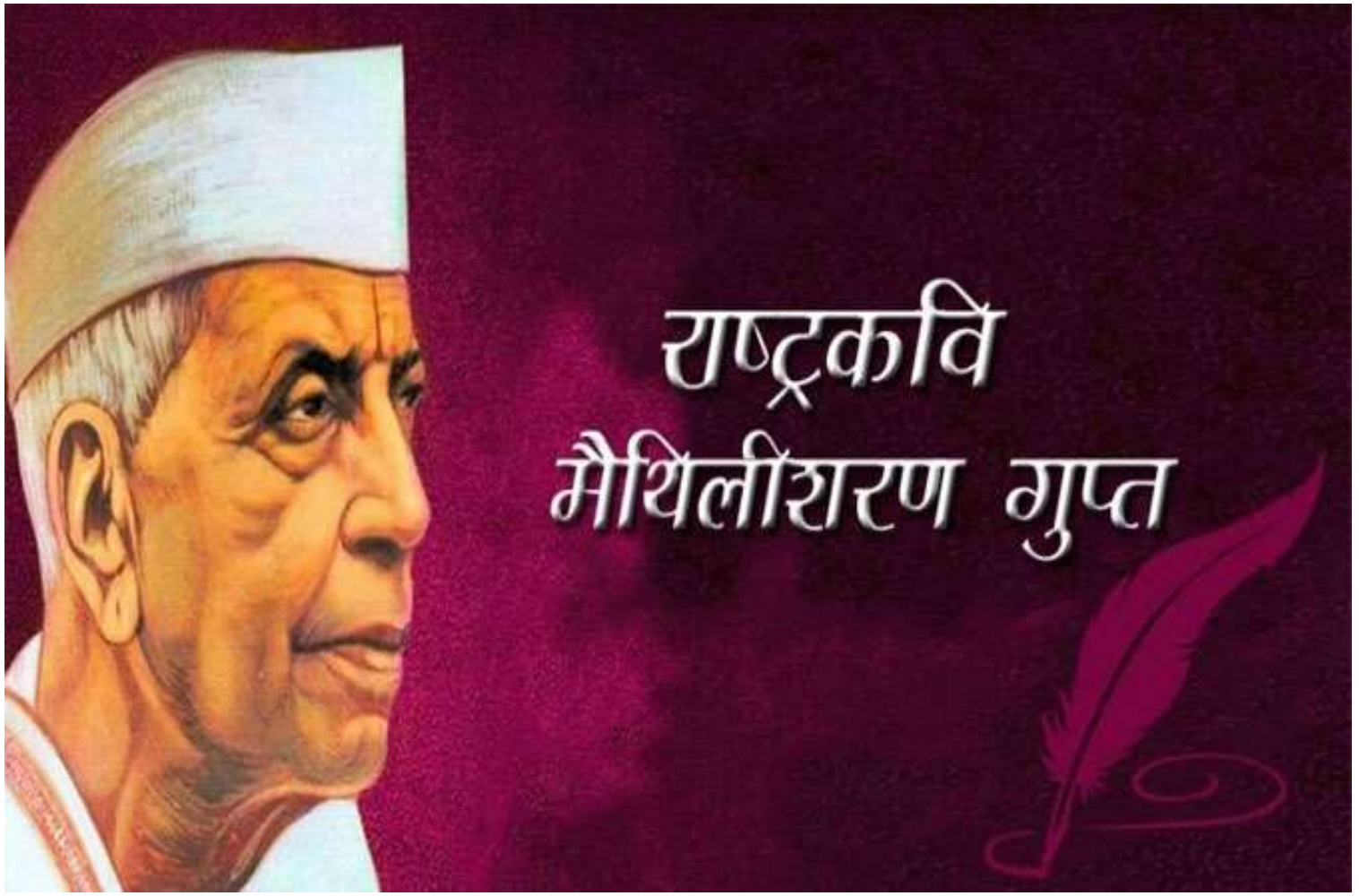
राष्ट्रकवि
मैथिलीशरण गुप्त

- **मैथिलीशरण गुप्त** : जन्म3 अगस्त 1886 चिरगाँव, उत्तर प्रदेश, मृत्यु : दिसम्बर 12, 1964
- कवि, राजनेता, नाटककार, अनुवादक.
- शिक्षा प्राथमिक-चिरगाँव, मिडिल - मैकडोनल हाई स्कूल
- सम्मान : हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार (1935)
  मंगलाप्रसाद पुरस्कार,
  हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा (1937)
  साहित्यवाचस्पति (1946)
  पद्मभूषण (1954)

- **महाकाव्य**- साकेत,

- **खण्डकाव्य**- यशोधरा , जयद्रथ वध, भारत-भारती, पंचवटी, नहुष, अंजलि और अर्घ्य, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, झंकार , पृथ्वीपुत्र, वक संहार , शकुंतला आदि

- **नाटक** - रंग में भंग , राजा-प्रजा, वन वैभव , विकट भट , विरहिणी , वैतालिक, शक्ति, सैरन्ध्री , स्वदेश संगीत, हिड़िम्बा , हिन्दू, चंद्रहास

- **भाषा शैली**

- मैथिलीशरण गुप्त की काव्य **भाषा** खड़ी बोली है। भावों को अभिव्यक्त करने के लिए गुप्त जी के पास अत्यन्त व्यापक शब्दावली है। संस्कृत के साथ गुप्त जी की भाषा पर प्रांतीयता का भी प्रभाव है।

- **शैलियों** के निर्वाचन में मैथिलीशरण गुप्त ने विविधता दिखाई, किन्तु प्रधानता प्रबन्धात्मक इतिवृत्तमय शैली की है। उनके अधिकांश काव्य इसी शैली में हैं- 'रंग में भंग', 'जयद्रथ वध', 'नहुष', 'सिद्धराज', 'त्रिपथक', 'साकेत' आदि प्रबंध शैली में हैं। यह शैली दो प्रकार की है- 'खंड काव्यात्मक' तथा 'महाकाव्यात्मक'। साकेत महाकाव्य है तथा शेष सभी काव्य खंड काव्य के अंतर्गत आते हैं।

- **<u>सखि, वे मुझसे कहकर जाते (यशोधरा)</u>**

- सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
  कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?

  मुझको बहुत उन्होंने माना
  फिर भी क्या पूरा पहचाना?
  मैंने मुख्य उसी को जाना
  जो वे मन में लाते।
  सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

  स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
  प्रियतम को, प्राणों के पण में,
  हमीं भेज देती हैं रण में -
  क्षात्र-धर्म के नाते।
  सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

- हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
  किसपर विफल गर्व अब जागा?
  जिसने अपनाया था, त्यागा;
  रहे स्मरण ही आते!
  सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

  नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
  पर इनसे जो आँसू बहते,
  सदय हृदय वे कैसे सहते?
  गये तरस ही खाते!
  सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

- जायें, सिद्धि पावें वे सुख से,
  दुखी न हों इस जन के दुख से,
  उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से?
  आज अधिक वे भाते!
  सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

  गये, लौट भी वे आवेंगे,
  कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे,
  रोते प्राण उन्हें पावेंगे,
  पर क्या गाते-गाते?
  सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

- मैथिलीशरण गुप्त

धन्यवाद